ग्लोबल क्लाइमेट 2011-2020: WMO

प्रलिम्सि के लिये:

[विश्व मौसम विज्ञान संगठन](), ग्लोबल क्लाइमेट 2011-2020: डिकेड ऑफ एक्सीलरेशन, अल-नीनो घटना, [ग्रीनहाउस गैस (GHG)](), [समुद्री हीटवेव]()
, [हिमनद]()

मेन्स के लिये:

ग्लोबल क्लाइमेट 2011-2020: WMO, पर्यावरण प्रदूषण और गिरावट

[स्रोत: द हिंदू]()

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [विश्व मौसम विज्ञान संगठन (World Meteorological Organization - WMO)]() ने संपूर्ण ग्रह पर जलवायु परिवर्तन के खतरनाक त्वरण तथा इसके बहुमुखी प्रभावों के संबंध में एक रिपोर्ट प्रकाशित की है, जिसका शीर्षक***[illegible] [illegible] 2011-2020: [illegible] [illegible] [illegible]*** है।

रिपोर्ट से संबंधित प्रमुख बिंदु क्या हैं?

- **तापमान के रुझान:**
  - 2011-2020 का दशक भूमि तथा महासागर दोनों के लिये रिकॉर्ड स्तर पर सबसे गर्म दशक के रूप में उभरा।
  - वैश्विक औसत तापमान 1850-1900 के औसत से **1.10 ± 0.12 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ गया** है जो 1990 के दशक के बाद से प्रत्येक दशक में गर्मी पिछले दशक से अधिक रही है।
  - कई देशों में रिकॉर्ड स्तर पर उच्च तापमान दर्ज किया गया, वर्ष 2016 ([अल-नीनो]() **घटना** के कारण) तथा वर्ष 2020 सबसे गर्म वर्षों के रूप में सामने आए।

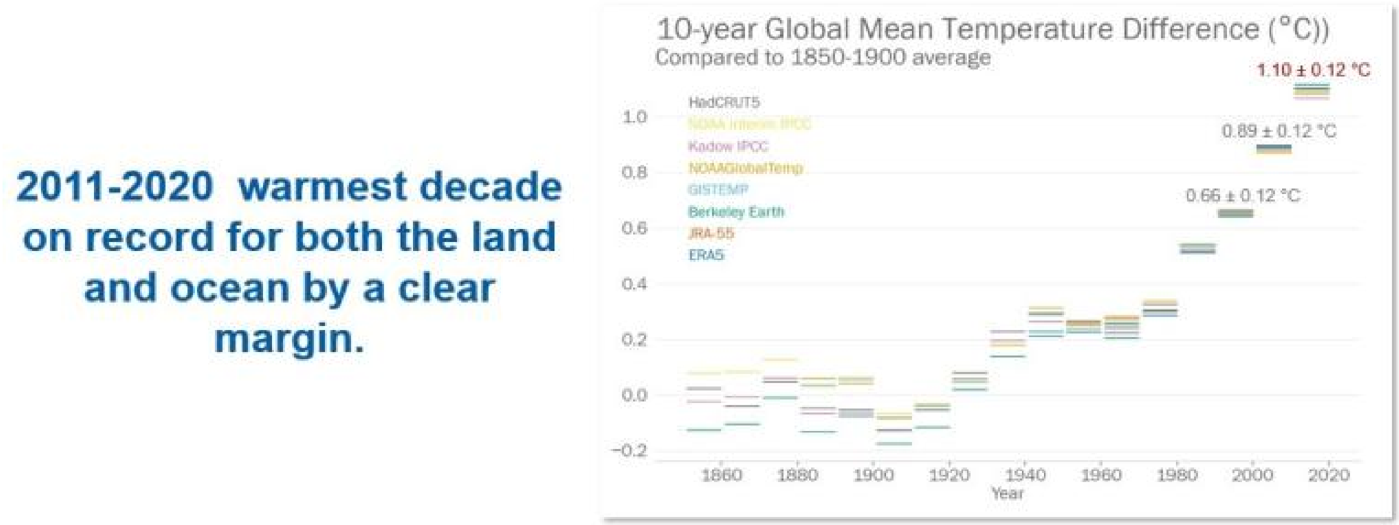

[//]()

- **ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन:**
  - प्रमुख **ग्रीनहाउस गैसों (GHG)** की वायुमंडलीय सांद्रता में वृद्धि जारी रही, विशेष रूप से CO2, 2020 में 413.2 ppm तक पहुँच गई, जो मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन के दहन और भूमि-उपयोग परिवर्तनों के कारण थी।
  - इस दशक में **CO2 की औसत वृद्धि दर में वृद्धि देखी** गई, जो जलवायु को स्थिर करने के लिये स्थायी उत्सर्जन में कमी की तत्काल आवश्यकता को उजागर करती है।
- **समुद्री परिवर्तन:**
  - **महासागर के गर्म होने की दर में काफी तेज़ी आई, 90% संचित ऊष्मा समुद्र** में जमा हो गई। वर्ष 2006-2020 तक **ऊपरी 2000 मीटर की गहराई में वार्मिंग दर दोगुनी** हो गई, जिससे समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित हुआ।
  - CO2 अवशोषण के कारण महासागर के अम्लीकरण ने समुद्री जीवों के लिये चुनौतियाँ पैदा कीं, जिससे उनके खोल और कंकाल का निर्माण प्रभावित हुआ।
- **समुद्री गर्म लहरें और समुद्र स्तर में वृद्धि:**
  - समुद्री हीटवेव की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हुई, जिससे वर्ष 2011 और 2020 के बीच **समुद्र सतह लगभग 60% प्रभावित** हुआ।
  - वर्ष **2011-2020 तक वैश्विक औसत समुद्र स्तर में 4.5 मिमी/वर्ष की वृद्धि** हुई, जिसका मुख्य कारण समुद्र का गर्म होना और बर्फ के बड़े पैमाने पर नुकसान है।
- **ग्लेशियर और हिम परत का नुकसान:**
  - वर्ष 2011 और 2020 के बीच वैश्विक स्तर पर ग्लेशियर **लगभग 1 मीटर प्रतिवर्ष की कमी देखी गई**, जिससे अभूतपूर्व जनहानि हुई, इससे पानी की आपूर्ति प्रभावित हुई।
  - **वर्ष 2001-2010 की तुलना में ग्रीनलैंड और अंटार्कटिक में हिम परत में 38%** से अधिक की गिरावट आई, जिसने समुद्र के स्तर में वृद्धि में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।
- **आर्कटिक सागर में बर्फ का कम होना:**
  - ग्रीष्म मौसम के दौरान आर्कटिक समुद्री बर्फ में पिघलना जारी रहा, जिसका औसत मौसमी न्यूनतम स्तर 1981-2010 के औसत से 30% कम था।
- **ओज़ोन छिद्र और सफलताएँ:**
  - **वर्ष 2011-2020 की अवधि** में अंटार्कटिक ओज़ोन छिद्र कम हो गया, जिसका श्रेय **मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल** के तहत **सफल अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई को दिया गया है।**
  - इन प्रयासों के कारण ओज़ोन-क्षयकारी पदार्थों से समताप मंडल में प्रवेश करने वाले क्लोरीन में कमी आई है।
- **सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) पर प्रभाव:**
  - चरम मौसम की घटनाओं ने **SDG** की प्रगति में बाधा उत्पन्न की, जिससे खाद्य सुरक्षा, मानव गतिशीलता और सामाजिक आर्थिक विकास प्रभावित हुआ है।
  - प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों में सुधार से प्रभावित लोगों की संख्या में कमी आई है, लेकिन **चरम मौसम की घटनाओं से आर्थिक नुकसान बढ़ गया है**।
  - 2011-2020 का दशक 1950 के बाद पहला दशक था जब **10,000 या उससे अधिक** मौतों वाली एक भी **अल्पकालिक घटना** नहीं हुई थी।

जलवायु और विकास लक्ष्यों पर कार्रवाई को मुख्यधारा में लाने के लिये WMO की सिफारिशें क्या हैं?

- अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और **उनके भागीदारों के साथ सहयोग के माध्यम से वर्तमान** एवं भविष्य के वैश्विक संकटों के खिलाफ सामूहिक समुत्थानशीलता को बढ़ाना।
- सहक्रियात्मक कार्रवाई को आगे बढ़ाने के लिये **विज्ञान-नीति-समाज** संपर्क को मज़बूत करना।
- विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण/ग्लोबल साउथ के लिये राष्ट्रीय, संस्थागत और व्यक्तिगत स्तरों पर **संस्थागत क्षमता निर्माण** एवं क्रॉस-सेक्टरल व अंतर्राष्ट्रीय सहयोग **को बढ़ावा** देना।
- राष्ट्रीय, उप-राष्ट्रीय और बहु-राष्ट्रीय स्तरों पर **जलवायु एवं विकास सहक्रियाओं को बढ़ाने के लिये** सभी क्षेत्रों और विभागों के नीति निर्माताओं के बीच **नीतिगत सुसंगतता एवं समन्वय सुनिश्चित करना।**

WMO क्या है?

- **परिचय:**
  - यह 192 सदस्य राष्ट्रों और क्षेत्रों की सदस्यता वाला एक **अंतर-सरकारी संगठन** है। भारत भी इसका एक सदस्य है।
  - इसका गठन अंतर्राष्ट्रीय मौसम विज्ञान संगठन (IMO) से हुआ, जिसकी स्थापना वर्ष 1873 वियना अंतर्राष्ट्रीय मौसम विज्ञान कॉन्ग्रेस के बाद की गई थी।
- **स्थापना:**
  - **23 मार्च, 1950 को WMO कन्वेंशन** के अनुसमर्थन द्वारा स्थापित WMO मौसम विज्ञान (मौसम और जलवायु), परिचालन जल विज्ञान तथा संबंधित भू-भौतिकी विज्ञान के लिये **संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी** बन गई।
- **मुख्यालय:**
  - जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/the-global-climate-2011-2020-wmo